13-2-84

सम्मेलन के पश्चात मेडीटेशन हाल में कुछ विदेशी भाई-बहनों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

''आज प्रेम के सागर, शान्ति के शागर बाप अपने शान्ति प्रिय, प्रेम स्वरुपम, बच्चों से मिलने आये हैं। बापदादा सारे विश्व के आत्माओं की एक ही आश शान्ति और सच्चे प्यार को देश सर्व बच्चों की यह आश पूर्ण करने के लिए सहज विधि बताने बच्चों के पास पहुँच गये हैं। बहुत समय से भिन्न-भिन्न रुपों से इसी आश को पूर्ण करने के लिए बच्चों ने जो प्रयत्न किये वह देख-देश रहमदिल बाप को, बच्चों पर रहम आता, दाता के बच्चे और मांग रहे हैं एक घड़ी के लिए, थोड़े समय के लिए शान्ति दे दो। अधिकारी बच्चे भिखारी बन शान्ति और स्नेह के लिए भटक रहे हैं। भटकते-भटकते कई बच्चे दिल शिकस्त बन गये हैं। प्रश्न उठता है कि क्या अविनाशी शान्ति विश्व में हो सकती है? सर्व आत्माओं में नि:स्वार्थ सच्चा स्नेह हो सकता है?

बच्चों के इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाप को स्वयं आना ही पड़ा। बापदादा बच्चों को यही खुशखबरी बताने के लिए आये हैं कि तुम ही मेरे बच्चे कल शान्ति और सुखमय दुनिया के मालिक थे। सर्व आत्माये सच्च् स्नेह की सूत्र में बंधी हुई थी। शान्ति और प्रेम तो आपके जीवन की विशेषता थी। प्यार का संसार, सुख का संसार, जीवन मुक्त संसार जिसकी अभी आश रखते हो, सोचते हो कि ऐसा होना चाहिए, उसी संसार के कल मालिक थे। आज वह संसार बना रहे हो और कल फिर उसी संसार में होंगे। कल की ही तो बात है। यही आपकी भूमि कल स्वर्ग भूमि होगी, क्या भूल गये हो? अपना राज्य सुख सम्पन्न राज्य जहां दु:ख अशान्ति का नाम निशान नहीं, अप्राप्ति नहीं। अप्राप्ति ही अशान्ति का कारण है और अप्राप्ति का कारण है अपवित्रता। तो जहां अपवित्रता नहीं, अप्राप्ति नहीं वहां क्या होगा? जो इच्छा है, जो प्लैन सोचते हो वह प्रैक्टिकल में होगा। वह ड्रामा की भावी अटल अचल है। इसको कोई बदल नहीं सकता। बनी बनाई बनी हुई है। बाप द्वारा नई रचना हो ही गई है। आप सब कौन हो? नई रचना के फाउन्डेशन स्टोन हो आप। अपने को ऐसे फाउन्डेशन स्टोन समझते हो तब तो यहां आये हो ना। ब्राह्मण आत्मा अर्थात् नईग् दुनिया के आधार मूर्त। बापदादा ऐसे आधार मूर्त बच्चों को देश्ख हर्षित होते हैं। बापदादा भी गइत गाते हैं वाह मेरे लाडले सिकीलधे मीठे-मीठे बच्चे। आप भी गीत गाते हो ना। आप कहते हो तुम ही मेरे और बाप भी कहते तुम ही मेरे। बचपन में यह गीत बहुत गाते थे ना। (दो तीन बहनों ने वह गीत गाया और बापदादा रिटर्न में रेसपान्ड रे रहे थे।)

बापदादा तो दिल का आवाज सुनते हैं। मुख का आवाज भले कैसा भी हो। बाप ने गीत बनाया और बच्चों ने गाया। अच्छा। (कुछ

भाई बहनें नीचे हाल में तथा ओम् शान्ति भवन में मुरली सुन रहे थे।) नीचे भी बहुत बच्चे बैठे हुऐ हैं। स्नेह की सूरते और मीठे-मीठे उल्हाने बापदादा सुन रहे हैं। सभी बच्चों ने दिल वा जान सिक वा प्रेम से विश्व का सेवा का पार्ट बजाया। बापदादा सभी की लगन पर सभी को स्नेह के झूले में झुलाते हुए मुबारक दे रहे हैं। जीते रहो, बढ़ते रहो, उड़ते रहो। सदा सफल रहो। सभी के स्नेह के सहयोग ने विश्व के कार्य को सफल किया। अगर एक बच्चे की मुहब्बत भरी मेहनत को देखें तो बापदादा दिन-रात वर्णन करते रहें तो भी कम हो जायेगा। जैसे बाप की महिमा अपरम-अपार है ऐसे बाप के सेवाधारी बच्चों की महिमा भी अपरम-अपार है, एक लगन, एक उमंग एक दृढ़ संकल्प कि हमें विश्व की सर्व आत्मओं को शान्ति का सन्देश जरुर देना ही है। इसी लगन के प्रत्यक्ष स्वरुप में सफलता है और सदा ही रहेगी। दूर वाले भी समीप ही हैं। नीचे नहीं बैठे हैं लेकिन बापदादा के नयनों पर हैं। काई ट्रेन में, कोई बस में जा रहे हैं लेकिन सभी बाप को याद हैं। उनहों के मन का संकल्प भी बापदादा के पास पहुँच रहा है। अच्छा–

बाप के घर में मेहमान नहीं लेकिन महान आत्मा बनने वाले आये हैं। बापदादा तो सभी को आई.पी. या वी.आई.पी. नहीं देखते लेकिन सिकीलधे बच्चे देखते हैं। वी.आई.पी. तो आयेंगे और थोड़ा समय देख, सुनकर चले जायेंगे। लेकिन बच्चे सदा दिल पर रहते हैं। चाहें कहीं भी जायेंगे लेकिन रहेंगे दिल पर। अपने वा बाप के घर में पहुँचने की मुबारक हो। बापदादा सभी बच्चों को मधु-बन का अर्थात् अपने घर का श्रृंगार समझते हैं। बच्चे घर का श्रृंगार हैं। आप सभी कौन हो ? श्रृंगार हो ना। अच्छा-

ऐसे सदा दृढ़ संकल्पधारी, सफलता के सितारे, सदा दिलतख्तनशीन, सदा याद और सेवा की लगन में मगन रहने वाले, नई रचना के आधार मूर्त, विश्व को सदा के लिए नई रोशनी नई जीवन देने वाले, सर्व को सच्चे स्नेह का अनुभव कराने वाले, स्नेही सहयोगी, निरन्तर साथी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

(डा.जोन्हा) असिस्टेन्ट सेक्रेट्री जनरल यू.एन.ओ.

बापदादा बच्चे के दिल के संकल्प को सदा ही सहयोग देते पूर्ण करते रहेंगे। जो आपका संकल्प है उसी संकल्प को साकार में लाने के योग्य स्थान पर पहुँच गये हो। ऐसे समझते हो – कि यह सब मेरे संकल्प को पूरे करने वाले साथी हैं। सदा शान्ति काक अनु-भव याद से करते रहेंगे। बहुत मीठी सुखमय शान्ति की अनुभूति होती रहेगी। शान्ति प्रिय परिवार में पहुँच गये हो। इसलिए सेवा के निमित्त बने। सेवा के निमित्त बनने का रिटर्न जब भी बाप को याद करेंगे तो सहज सफलता का अनुभव करते रहेंगे। अपने को सदा ''मैं शान्ति स्वरुप आत्मा हूँ, शान्ति का सागर का बच्चा हूँ। शान्ति प्रिय आत्मा हूँ'' यह स्मृति में रखना और इसी अनुभव द्वारा जो भी सम्पर्क में आये उन्हीं को सन्देशी बन सन्देश देते रहना। यही अलौकिक आक्यूपेशन सदा श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ कर्म द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति कराता रहेगा। वर्तमान और भविष्य दोनों ही श्रेष्ठ रहेंगे। शान्ति का अनुभव करने वाली योग्य आत्मा हो। सदा शान्ति को सागर में लहराते रहना।

जब भी कोई कार्य में मुश्किल हो तो शान्ति का फरिश्तों से अपना सम्पर्क रखेंगे तो मुश्किल सहज हो जायेगा। समझा। फिर भी बहुत भाग्यवान हो। इस भाग्य विधाता की धरनी पर पहुँचने वाले कोटों में कोई, कोई में भी कोई होते हैं। भाग्यवान तो बन ही गये। अभी पदमापदम भाग्यवान जरुर बनना है। ऐसा ही लक्ष्य है ना। जरुर बनेंगे सिर्फ शान्ति का फरिश्तों का साथ रखते रहना। विशेष आत्मायें विशेष पार्ट बजाने वाली आत्मायें यहाँ पहुँचती हैं। आपका आगे भी विशेष पार्ट है जो आगे चल मालूम पड़ता जायेगा। यह कार्य तो सफल हुआ ही पड़ा है सिर्फ जो भी श्रेष्ठ आत्मायें भाग्य बनाने वाली हैं उन्हों का भाग्य बनाने के लिए यह सेवा काक साधन है। यह तो हुआ ही पड़ा है, यह अनेक बार हुआ है। आपका संकल्प बहुत अच्छा है। और जो भी आपके साथी हैं, जो यहां से होकर गये हैं, स्नेही हैं, सहयोगी भी हैं। उन सबको भी विशेष स्नेह के पुष्पों के साथ-साथ बापदादा का याद-प्यार देना।

मैडम अनवर सादात से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात इजिप्ट के लिए सन्देश

अपने देश में जाकर धन की एकानामी का तरीका सिखलाना। मन की खुशी से धन की अनुभूति होती है। और धन की एकानामी ही मन की खुशी का आधार है। ऐसे धन की एकानामी और मन की खुशी का साधन बताना तो वे लोग आपको धन और मन की खुशी देने वाले खुशी के फरिश्ते अनुभव करेंगे। तो अभी यहां से शान्ति और खुशी का फरिश्ता बनकर जाना। इस शान्ति कुण्ड के साथ अविनाशी के वरदान को साथ रखना। जब भी कोई बात समाने आये तो ''मेरा बाबा'' कहने से वह बात सहज हो जायेगी। सदा उठते ही पहले बाप से मीठी-मीठी बातें करना और दिन में भी बीच-बीच में अपने आपको चेकर करना कि बाप के साथ हैं। और रात को बाप के साथ ही सोना, अकेला नहीं सोना। तो सदा बाप का साथ अनुभव करती रहेंगी। सभी को बाप का सन्देश देती रहेंगी। आप बहुत सेवा कर सकती हो क्योंकि इच्छा है सभी को खुशी मिले, शान्ति मिले, जो दिल की इच्छा है उससे जो कार्य करते हैं उसमें सफलता मिलती है। अच्छा ओम् शान्ति!